SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शिल्पकार आन्दोलन एवं नवजागरण के पुरोधाः मुंशी हरिप्रसाद टम्टा

रवि कुमार, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
एस. एस. जे. विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
रवि कुमार

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 13/12/2023
Plagiarism : 01% on 06/12/2023

शोध सार

आन्दोलन वह सामूहित संघर्ष है जो किसी बुराई से लड़ने के लिए लोगों के एक समूह द्वारा किया जाता है, आन्दोलन सामाजिक, धार्मिक, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक लक्ष्यों की प्राप्ति एवं राजनीतिक परिवर्तन की कोशिश के लिये चलाया जाता है। शिल्पकार आन्दोलन भी परिवर्तन की आंकाक्षा के लिये किया गया एक प्रयास था जिसका उद्देश्य अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों के जो सदियों से शिक्षा, रोजगार, और सार्वजनिक पहचान से वंचित थे, को अधिकार दिलाना था। हिमालय परिवेश के कुमाऊँ क्षेत्र में भी शिल्पकारों को अधिकार दिलाने में मुंशी हरिप्रसाद टम्टा का योगदान महत्वपूर्ण है, क्योकि मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने कुमाऊँ के नवजागरण का उदय किया। इनके द्वारा कई महत्वपूर्ण कार्य सुधारों का प्रयास किया गया, इनको अगर नवजागरण का पुरोधा कहा जाय न्यायसंगत होगा। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा मुंशी हरिप्रसाद टम्टा द्वारा किये गये सुधारों को दर्शाया गया है, जिसका उदेश्य समाज में फैली कुरीतियों को जड़ से उखाड फेंकना एवं समाज के दबे कुचले, शोषित व वंचित शिल्पकार वर्ग को न्याय दिलाना था।

मुख्य शब्द

शिल्पकार आन्दोलन, नवजागरण, मुंशी हरिप्रसाद टम्टा.

परिचय

राष्ट्रीय आन्दोलन का मुख्य उदेश्य देश की स्वतन्त्रता और सामाजिक सुधार की प्रक्रिया को प्रोत्साहन करना है। इसमें विभिन्न आन्दोलन सम्मिलित हो जाते है जिसमें संग्राम, शान्ति, सामाजिक, समरसता, न्याय और इंसाफ की मांग शामिल होती है। नवजागरण से तात्पर्य उस ऊर्जा से है जो जनसामान्य में नई चेतना या नई जागरूकता पैदा करती है। इसका उद्देश्य लोगों में

सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मामलों में जागृत करना होता है। यह भी कहा जा सकता है कि नवजागरण– समाज सुधार और विकास को प्रोत्साहन देता है। 19वीं सदी में भारत में नवजागरण का उदय हुआ जिसका मूल कारण पश्चिमी सभ्यता का प्रार्दुभाव होना था। भारत में कुछ विचारशील एवं बुद्धिमान लोगों ने पश्चिमी सभ्यता के सार्म्पक में आये तो उनका ध्यान देश की दुर्दशा, पिछडेपन और विदेशियों के समक्ष अपनी पराजय के करणों पर गयी। इसके अतिरिक्त अधिकांश भारतीय समाज परम्परागत विचारों, रीति–रिवाजों एवं संस्थाओं पर विश्वास रखता था, परन्तु कुछ अन्य भारतीय थे जो पश्चिम के नये विचारों एवं ज्ञान के महत्व को समझे एवं भारत में धर्म, समाज, कला, साहित्य, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन करने का प्रयास किया।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य 19वी सदी के उत्तरार्द्ध तथा 20वीं सादी के पूर्वार्द्ध में कुमाऊं की तत्कालीन स्थिति में नवजागरण आंदोलन की गतिविधियों एवं मुंशी हरिप्रसाद टम्टा द्वारा किए गए सुधारवादी आंदोलन का विश्लेषण करना एवं कैसे उन्होने राष्ट्र प्रेम में सबसे बड़ी बाधा जाति प्रथा को समाप्त करने प्रयास किया, साथ ही महिला सशक्तिकरण द्वारा महिलाओं को आगे बढ़ाने में उनके महत्वपूर्ण योगदान का अध्ययन करना हैं।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र 'शिल्पकार आन्दोलन एवं नवजागरण के पुरोधाः मुंशी हरिप्रसाद टम्टा' में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। विषय की अधिक गहन जानकारी के लिए प्रमुखतः द्वितीयक शोध सामग्री का उपयोग किया गया है जिसके अंतर्गत पुस्तकें, शोध पत्र, जर्नरलस, आलेख तथा इंटरनेट की सहायता ली गई है।

नवजागरण के प्रभाव से देश में अग्रेजी शिक्षा प्राप्त कई भारतीय शिक्षित वर्ग ने सम्पूर्ण भारत एक नवीन चेतना का उदय किया, इनके द्वारा यह रूढिवादिता, अन्धविश्वास, अशिक्षा, जाति प्रथा पर तीव्र प्रहार किया गया। इन्होंने समाज मे यह संदेश फैलाया कि यदि देश में राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत करनी है तो इसके लिये समाज से रूढ़िवादिता अन्धविश्वास, अशिक्षा एवं जाति प्रथा को जड़ से उखाडना जरुरी है। इसका परिणाम यह हुआ कि कई चिंतक एवं समाज सुधारक सामने आये, जिनमें राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती आदि, इसी समय शोषित समाज में महात्मा ज्योतिबा फुले (महाराष्ट्र), नारायण गुरु (केरल), स्वामी अछूतानन, सन्तराम, बी.ए. चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु, डॉ भीमराव अम्बेडकर, मुंशी हरिप्रसाद टम्टा (कुमाऊं, उत्तराखंड़) आदि महान समाज सुधारकों ने कई प्रयास किये। इन सभी विचारकों एवं समाज सुधारकों द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों की तीव्र आलोचना के साथ शोषित समाज को जागृत करने का प्रयास किया।

नवजागरण आन्दोलन तथा औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन व्यवस्था की हलचलों से सुदूर ब्रिटिश कुमाऊँ भी अछूता न रहा। ब्रिट्रिश कुमाऊं का एक ऐसा वर्ग भी था जो सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक अधिकारों से वंचित था, जहाँ एक ओर सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने भारत में राष्ट्रीय भावना को जागृत किया था, वहीं ब्रिट्रिश शासन ने 1880–84 में प्रथम बार जनगणना का कार्य शुरू किया गया, और पहली बार व्यक्ति की जाति दर्शायी गयी जो किसी ने कल्पना भी नही की थी। प्रथम जनगणना में हिन्दूओं को तीन वर्गों में बाँटा गया (1) हिन्दू (2) जनजाति (3) शिल्पकार। इस जनगणना से जहाँ शोषित वर्ग में जाति अभिमान की भावना जागृत हुयी साथ ही सामाजिक गतिशीलता को भी बढावा मिला। इसी जाति अभिमान की भावना से ब्रिटिश कुमाऊँ के भी कुछ विचारक प्रभावित हुये, जिस प्रकार पश्चिमी शिक्षा प्राप्त सामान्य वर्ग के लोगों में विदेशी दासता के प्रति जागरूकता आयी, ठीक उसी प्रकार शिल्पकार वर्ग के कुछ विचारक ने अपने अधिकारों को जाना, साथ ही सामाजिक, नागरिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीति अधिकारो को प्राप्त करने के लिये संघर्ष करने लगे। शिल्पकार समाज के कुछ जागरूक शिक्षित समाज सुधारकों ने यह समझ लिया था कि हिन्दू समाज में व्याप्त इस कुप्रथा का मुख्य कारण तथाकथित उच्च जातियॉ है, जो निम्न जातियों के प्रति अच्छी सोच नही रखते है। कुमाऊँ में भी विभिन्न नवजागरण का समागम दिखाई दिया जहाँ एक ओर राष्ट्रीय स्तर पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने मोर्चा सम्भाला था, वहीं कुमाऊँ मे क्षेत्रीय स्तर पर मुंशी

हरिप्रसाद टम्टा ने जाति व्यवस्था के प्रति राष्ट्रवादी एवं समतामूलक विचारों के साथ आन्दोलन को जन्म देने वाले प्रदान व्यक्ति थे, इनके द्वारा विभिन्न जातीय सुधार का सफल प्रयास किया गया।

नवजागरण, पुरोधा

हरि प्रसाद टम्टा जी का जन्म 26 अगस्त सन् 1887 ई. को अल्मोड़ा नगर में हुआ था। माता–पिता ने इन्हें हरि नाम दिया था, जो आगे चलकर हरि प्रसाद टम्टा के नाम से विख्यात हुए। पिता का नाम गोविन्द प्रसाद टम्टा तथा माता का नाम गोविन्दी देवी था। बचपन में ही इनके पिता गोविन्द प्रसाद टम्टा जी का देहान्त हो गया था। इनका लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा उस समय के प्रख्यात समाजसेवी तथा प्रसिद्ध व्यापारी इनके मामा जी श्री कृष्ण टम्टा जी के संरक्षण में हुआ। समाज सेवा का पाठ हरि प्रसाद टम्टा जी ने मामा कृष्ण टम्टा के सानिध्य में रहकर ही सीखा। कृष्ण टम्टा जी उस समय शिल्पकार समाज में फैली कुरीतियों तथा आर्थिक गरीबी को मिटाने के लिए संघर्षरत थे। हरि प्रसाद टम्टा जी बचपन से ही मामा जी के सामाजिक उत्थान के कार्यों में हाथ बटाने लगे थे। इनका अपूर्व उत्साह, अदम्य साहस एवम् बुद्धिमता को देखते हुए मामा ने एक प्रकार से सारी बागडोर उन्हें सौप दी। अपनी शिक्षा–दीक्षा की ओर अधिक ध्यान दिये बिना ही वे सामाजिक सुधार के कार्यों मे तन–मन–धन से समर्पित हो गये।

कुमाऊँ के प्रत्येक जाति में अपनी परिस्थिति को ऊठाने में संकल्पबद्ध थी। उन्होंने अपने सदस्यों को लेकर सभाओं का निर्माण किया इसके साथ ही गढ़वाल में भी तारा दन्त गैरोला द्वारा 'गैरोला सभा' का संगठन किया। 1905 में कुमाऊँ में मुंशी हरिप्रसाद 'टम्टा सुधार वर्ग की स्थापना की। कृष्ण टम्टा को सभा का अध्यक्ष एवं हीरा टम्टा को सचिव नियुक्त किया गया। स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में इस सभा ने केवल टम्टा जाति के उत्थान एवं विकास के लिए कार्य किया, परन्तु 1911 में जब जार्ज पंचम इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा तो सम्पूर्ण भारत में समारोह आयोजित किये गये। अल्मोड़ा में भी समारोह की तैयारी चल रही थी। कृष्णा टम्टा की दुकान से मखमल के थान व मंच को सजाने का पर्याप्त सजावटी कपड़ा हरि प्रसाद टम्टा के आग्रह पर दिया गया, परन्तु इस समारोह के आयोजन में शिल्पकारों को जातिगत आधार पर नही बुलाया गया, फिर भी मुंशी हरिप्रसाद टम्टा, कृष्णा टम्टा के साथ सामारोह मे पहुँचे तो उनका अपमान किया गया। इसी घटना के बाद से टम्टा सभा राजनीतिक अधिकार पाने के लिये जागरुक हुयी जिससे शिल्पकार लोगों को समान अधिकार प्राप्त हो सके। इस घटना के कुछ समय पश्चात कुमाऊं में दो महत्वपूर्ण घटना घटित हुई पहली अल्मोड़ा अखबार में अब शिल्पकारों के पक्ष में लिखना प्रारंभ हुआ दूसरा 1918 में कृष्णा टम्टा नगर पालिका अल्मोड़ा के सदस्य निर्वाचित हुए। श्री कृष्णा टम्टा के मेम्बर चुनने के बाद कई सवर्ण लोग इस्तीफा देने, को तैयार हो गये। 1914 में 'टम्टा सभा' का नाम 'कुमाऊँ शिल्पकार सभा' रखकर इसका कार्य विस्तार किया, इस सभा द्वारा शिल्पकारों के आत्मसम्मान विस्तार आत्मविश्वास के लिये आवाज ऊठाई गई। मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने इस सभा में आजीवन अध्यक्ष रहे, इन्होंने शिल्पकारों में जीवन डालने का अथक परिश्रम किया वह उपेक्षणीय नहीं है।

हरिप्रसाद टम्टा ने भारत की आजादी के साथ ही संपूर्ण उत्तराखंड में शोषित, वंचित व शिल्पकार वर्ग को शिक्षित तथा आर्थिक रूप से संपन्न करने का उद्देश्य बनाया। स्वामी चिम्यमयानन्द पुरी जी ने कहा है कि– ''स्व. हरि प्रसाद टम्टा जी का लक्ष्य केवल शिल्पकारों की प्रगति तथा उन्नति नहीं बल्कि भारत की स्वतंत्रता और सेवा भी उनका लक्ष्य था। मुंशी हरिप्रसाद टम्टा को मालूम था कि इस सभा का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश प्रशासन को साथ में लेकर ही पूर्ण किया जा सकता है इसलिए उन्होंने टम्टा सुधारक सभा के उद्देश्य को अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया। तत्कालीन ब्रिटिश शासन में कुमाऊं के सभी वर्ग अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य क्षेत्रों में अंग्रेजों की सहायता के लिए बाध्य थे, अंग्रेज भी अपनी नीति के अंतर्गत शोषित वर्ग को समर्थन कर रहे थे यही वजह रही कि यह सभा अपने उद्देश्यों को पूरी करती चली गयी। मई 1934 ई० में 'होली हिमालय' के लेखक पादरी ओकले ने कहा है कि– ''परिवर्तन का कार्य सारा श्रेय 'कुमाऊं शिल्पकार सभा' के प्रधान और शिल्पकारों के एकमात्र नेता राय साहब मुंशी हरिप्रसाद टम्टा जी को है।

मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने सिर्फ शिल्पकारों के लिए ही नहीं वरन् गरीब, पिछड़े एंव शोषित वर्गों के लिए भी समय–समय पर सहयोग कार्यक्रम शुरू किये। सन् 1907 ई. में काल के समय भोजन सामग्री की सस्ती दुकान श्री मुंशी हरिप्रसाद टम्टा जी के सहयोग से खोली गई, जिसका प्रमुख उद्देश्य गरीबों की मदद करना था। इसके अतिरिक्त प्रथम विश्वयुद्ध के समय भी पर्वतीय क्षेत्रों में इन्ही सस्ती दुकानों द्वारा नमक, मिट्टी का तेल (कैरोसीन) एवं कपड़ा इत्यादि वस्तुओं को स्थानीय लोगों के लिए सस्ती दरों पर उपलब्ध करवाया गया।

सन् 1913 ई. में राष्ट्रीय स्तर पर आर्य समाज के माध्यम से गरीबी के कारण हो रहे धर्मांतरण को रोकने के लिए लाला लाजपत राय द्वारा सुनकिया ग्राम में शिल्पकारों का जनेऊ संस्कार करना प्रारंभ किया। इस घटना का प्रभाव सम्पूर्ण कुमाऊं– गढ़वाल में भी देखने को मिला। अल्मोडा में भी कार्यक्रमों के द्वारा धर्मांतरण को रोकने का प्रयास किया गया, किंतु जनेऊ धारण करने वाले लोगों को क्रूरता झेलनी पड़ी। उनसे जमीन छीन ली गयी, कई स्थानों पर शिल्पकारों को जान से मार दिया गया। मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने इस समय पर भी सताए हुए लोगों की सहायता की एवं स्वयं के खर्चे से उनके मुकदमे लड़े। इन तमाम अत्याचारों को देखकर वह अत्यधिक विचलित हो हुए। उनका विचार था कि– जनेऊ धारण कर लेने से ही मात्रा मनुष्य के संस्कारों में सुधार नहीं आ सकता, इससे अधिक विचारों और कार्यों में सुधार लाने की आवश्यकता है। तन की शुद्धि से पहले मन और आत्मा की शुद्धि आवश्यक है। उनके द्वारा इसका विरोध किया गया।

मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने शिक्षा को परम धर्म और समस्त उन्नतियों का मूल मानकर पिछले समाज में शिक्षा के प्रचार प्रसार का सफल प्रयास किया। कुमाऊं में तथाकथित उच्च जाति के लोग ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे और पढ़ने का कार्य भी वही करते थे। यह शिक्षा ब्राह्मणों के नियंत्रण में ही था, शिल्पकारों की मनोदशा ऐसी थी कि वह अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते थे, इसी का फायदा अंग्रेजी सरकार ने मिशनरी स्कूल खोलकर शिल्पकारों का धर्मांतरण कर उन्हें ईसाई बनाने का प्रयास किया। किंतु मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने इस स्थिति से बचने के लिए सर्वप्रथम कृष्णा–डे–स्कूल तथा मेहनत मजदूरी करने वालों के लिए कृष्णा–नाइट–स्कूल खोला। 1914 ईस्वी में कृष्ण वासनालय खोल बहुत से निर्धन बच्चों को स्वयं के खर्चे पर पढ़ाया एवं उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया। टम्टा जी द्वारा महिला सशक्तिकरण पर भी जोर दिया गया। वह चाहते थे कि महिलाओं में आत्मविश्वास जागे और उन्हें समाज में समानता का अधिकार मिले, इस उद्देश्य की पूर्ति में उनका सहयोग टम्टा जी की भांजी लक्ष्मी देवी ने सन् 1935 ई0 में लक्ष्मी देवी 'समता' पत्रिका की संपादक बनी। 'समता' पत्र के प्रकाशन के पीछे हरिप्रसाद टम्टा का मुख्य उद्देश्य कुमाऊं – गढ़वाल के दलितों में जागृति लाकर उनके शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास करना था। मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने इस 'समता' पत्र द्वारा महिला के उत्थान के लिए भी कार्य किया समता के संपादन काल में लक्ष्मी देवी ने स्त्री शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, कला–कौशल की उन्नति एवं सर्वहारा वर्ग की समस्याओं और उनके समाधान को लेकर अनेक ज्वलंत सामाजिक एवं उपयोगी लेख लिखें।

मुंशी हरिप्रसाद टम्टा द्वारा सेना में शिल्पकारों को भर्ती करने की भी मांग की गयी। इससे पहले कुमाऊं में शिल्पकार युवकों को फौज में भर्ती होने का अधिकार प्राप्त नहीं था क्योकि ब्रिटिश सरकार द्वारा शिल्पकारों को असैनिक जाति घोषित किया गया था, इसलिए उन्हें सेना की भर्ती होने का अधिकार प्राप्त नहीं था। मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने कुमाऊं के शिल्पकार सभा के माध्यम से इसका विरोध किया सन 1917 ईस्वी में सरकार ने सफरनैना बटालियन नामक एक लेबर कोर बनाकर भीमताल (जिला–नैनीताल) में शिल्पकारों को भर्ती किया। श्री टम्टा के प्रयासों से 1921 में हजारों शिल्पकारों को सेवा में भर्ती किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध में लगभग 300 शिल्पकारों को बढ़ाई और लोहार जैसे तकनीकी क्षेत्र में जवानों के रूप में भर्ती किया गया।

सन् 1920 ईस्वी में कुमाऊं शिल्पकार सभा के माध्यम से मुंशी हरिप्रसाद टम्टा ने अपने भाई श्री ललता प्रसाद टम्टा के सहयोग से 'हिल मोटर ट्रांसपोर्ट' की स्थापना की साथ ही हल्द्वानी में मोटर वाहनों का मोटर वाहनों का प्रशिक्षण केद्र खोला। इससे पूर्व कुमाऊं में यातायात व्यवस्था सुदृढ़ नहीं थी, जिससे कुमाऊं का संपर्क शेष भारत से आसानी से नहीं हो पता था।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में कुमाऊं की तत्कालीन परिस्थितियों में नवजागरण आंदोलन की गतिविधियॉ एवं मुंशी हरिप्रसाद टम्टा द्वारा किए गए सुधार आंदोलन का विश्लेषण करना था। अतः यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि तत्कालीन परिस्थितियों में यदि कुमाऊँ शिल्पकार सभा के माध्यम से उसके आजीवन अध्यक्ष मुंशी हरि प्रसाद टम्टा निरन्तर अथक प्रयास नही करते रहते, तो कुमाऊँ का समाज जाति प्रथा की बेडियों में हमेशा जकड़ा होने के कारण एकता और अखण्डता की भावना से वंचित रहता जिसका प्रभाव राष्ट्रीय आन्दोलन पर भी अवश्य पड़ता। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवी सदी के पूर्वाद्ध में जहाँ एक ओर कुमाऊँ शिल्पकार संभा के सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने समस्त कुमाऊँनियों में एकता और अखण्डता के द्वारा राष्ट्रीय भावना जागृत की वहीं दूसरी ओर पाश्चात्य प्रभुत्व ने कुछ ऐसी परिस्थितियों को जन्म दिया, जिन्होंने अन्त में उसी पाश्चात्य साम्राज्यवाद को चुनौती है। मुंशी हरि प्रसाद टम्टा ने देश प्रेम में सबसे बड़ी बाधा जाति–प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया, साथ ही महिला सशक्तिकरण द्वारा महिलाओं को आगे बढ़ाने में योगदान दिया।

संदर्भ सूची

1. कंवल भारती, सांकृत्यायन राहुल और अम्बेडकर भीमराव, *बौद्ध धर्म, आर्य सिद्धात और अछूतोद्धार,* साहित्य उपक्रम, दिल्ली 2007, पृष्ठ–7,
2. देसाई, ए. आर., *भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि,* मेकमिलन कं०, दिल्ली 1977, पृष्ठ– 210–21।
3. टम्टा, संजय कुमार *'कुमाऊँ शिल्पकार सभा',* भारतीय नवजागरण की एक सशक्त प्रतिनिधि, शोध पत्र, राष्ट्रीय जन–जागृति के साहित्यिक स्त्रोत, पृष्ठ–2।
4. वही।
5. वही।
6. आर्या, प्रहलाद राम, मुंशी हरिप्रसाद तथा कुमांऊ केसरी खुशी राम का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध–2015 पृष्ठ–20।
7. वही।
8. गढ़वाल महा महेन्द्रानुमोदित सरौला सभा के नियम– 1905।
9. जिज्ञासु, चन्द्रिका प्रसाद, *दलित समांनजलि,* पृष्ठ–1।
10. *समता,* साप्ताहिक पत्रिका विशेषांक, 24 फरवरी 1935
11. टम्टा दिवाकर, नवजागरण का प्रतीक हरिप्रसाद टम्टा और समता, लधु शोध प्रबंध– 2012–13, पृष्ठ–70
12. अल्मोड़ा मार्च 23, 1914।
13. समता, स्वर्ण जंयती विशेषांक, अगस्त 1, 1984।
14. वही।
15. वही।
16. जिज्ञासु, चन्द्रिका प्रसाद, उपरोक्त, पृष्ठ–3।
17. विद्यालंकार, सत्यकेतु एवं हरदत्त वेदांलंकर, *आर्य समाज का इतिहास,* खंड–4, आर्य स्वाध्याय, नई दिल्ली, 1984–86, पृष्ठ–265।

18. समता स्वर्ण जयंती विशेषांक, 1 अगस्त 1984, टम्टा, दया शंकर, क्रांतिदूत मुंशी हरिप्रसाद टम्टा, समता प्रकाशन, अल्मोडा 1995, पृष्ठ– 27।
19. टम्टा, दया शंकर, पूर्वोत्त पृष्ठ– 25।
20. ट्रेल, जी० डब्ल्यू, स्ट्रैटिस्टिकल स्कैच ऑफ कुमाऊँ, *एशियांटिक रिसर्चेज,* भाग–16–18, पृष्ठ–164।
21. देसाई, पूर्वोक्त, पृष्ठ–112।
22. टम्टा, दिवाकर, पूर्वोक्त, पृष्ठ– 77–78।
23. शाह, जोगालाल, बाबू बोधा सिंह, गढवाल शिल्पकार समाज, दिल्ली 1978, पृ0– 5।
24. समता, स्वर्ण जयंती विशेषांक, अगस्त 1, 1984।
25. समता, जनवरी 29, 1941, समता, मार्च 5, 1941, समता, फरवरी 24, 1981, अंक–2, पृष्ठ–21।
26. टेक्निकल रिक्रूटिंग आफिसर, अल्मोडा मैमोरेन्डम एच0 ओ0, 3/4285, 1 सितम्बर 1941।
27. समता, स्वर्ण जयंति विशेषांक, 1 अगस्त, 1984।

****